RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-10
October-2019
ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

घनश्याम त्रिवेदी कृत ‘ नूतन सुंदरकांडम् ’ के दृश्य छ से ग्यारह का अनुशीलन

महेशकुमार नानुभाई झाला

पी.एच.डी. शोधछात्र, संस्कृत विभाग, भाषासाहित्य भवन, गुजरात युनिवर्सिटी, अमदावाद

विश्व में संस्कृत वाड्गमय साहित्य का स्थान उत्तम् एवम् बृहद के रूप में हैं । इस वाड्गमय में हमारे अति महत्वपूर्ण और भारत के इतिहास की छबी दिखाने वाले दो आर्षकाव्य भी समाविष्ट है । पहला रामायण ओर दुसता महाभारत । इन दोनो आर्ष महाकाव्यो को , कई विद्दजनोने अपनी अपनी दृष्टि से देखा और उनके कथावस्तु का उपयोग करके अपनी कृतिओकी रचना भी की । लेकिन हम यहां पे प्राचीन कविओं की जैसे भास, कालिदास आदि रचित कृतिओ की बात नहीं करेंगे , किन्तु अर्वाचीन कविश्री घनश्याम मा. त्रिवेदीकृत " नूतन सुंदरकाण्डम् " की बात करेगें । रामायण के सुंदरकाण्ड को लक्ष्य में रखकर कीस तरह अपनी कृति को रचा हे, ओर किन नूतन अंशो को इसमे नवाजा हे । यह इस विषय पर हमारा उपक्रम है ।

कविश्री घनश्याम त्रिवेदीजी ने " नूतन – नाट्यसुन्दरकाण्डम् अंगदविष्टिः " नामक एक पुस्तक रचा हे । इस पुस्तक में चार नाटक मौजूद है । अनुक्रम से किष्किन्धाकाण्ड , नूतनं सुन्दरकाण्डम् , अंगदविष्टि , और भरत पुण्यप्रकोपः अब बात करेगें ‘नूतन सुन्दरकाण्डम् ’ के बारे में प्रस्तुत कृति दृश्य में विभाजित है । जिन में 11 दृश्य देखने को मिलते है ।[1] हमें यहां पर केवल 6 से 11 दृश्य तक चर्चा को प्रस्तुत करेगें । क्योकि इसके आगे के दृश्य पर शोधलेख लिखने का काम मेरे दुसरे मित्र कर रहें है । कृति में समाविष्ट दृश्य इस प्रकार हे ।

6. विभीषणभवनम् ।
7. अशोकवाटिकायाम् ।
8. हनुमत्सीतयोःमेलनम् ।
9. रावणस्य राज्यसभायाम् ।
10.अशोकवाटिकायां हनुमत् सीतयोः पुर्नमेलनम् ।
11. विभीषणराज्याभिषेकः

कथावस्तु-

विभीषणभवनम्-

इस दृश्य में हनुमान और विभीषण का संवाद निरूपित है । हनुमान सीता को ढुंढते- ढुंढते रावण के महालय को देखते है तत्पश्चात मनोहर सुन्दर मन्दिर को देखते है ।जहां आंगन में तुलसी के वृन्द है और रामनामक रटन भी है । जहां पर हनुमान अब ब्राह्मन का रूप धारण करते है । और विभीषण संवाद करके अपना प्रयोजन बताते है । विभीषण भी अपनी और से यथाशक्ति सहायता देते है । अन्त में हनुमान भी आत्ममंथन करते हुऐ दो फल की बात बताते है । प्रभु के नाम मात्र से दोष दूर होते है किन्तु मोक्ष की प्राप्ति प्रभुकार्य से होती है यहाँ पर छठवाँ दृश्य समाप्त होता है ।

अशोकवाटिकायां –

हनुमान् अशोकवाटिका मे प्रवेश करते है । जो अतीव सुंदर और मनोहर है । जहा कई तरह के वृक्ष है जो अनेक राक्षसो से घिरी हुई है । ऐसे स्थान पर हनुमान व्यग्र- क्लान्ता- निस्तेजा आर्या सीता को देखते है । ऐसी अवस्था मे लंकापति रावण को प्रलोभन और उसकी धमकी के बारे में संक्षेप किया गया है । बाद मे मन्दोदरी नीति का

[1] .वास्तविक रूप से इसमे दृश्य की संख्या दश है. किन्तु प्रिन्टिग मिस्टेक के कारण दो बार ‘सात’ का अङक आ गया है । इस कारण से हमने यहा ग्यारह दृश्य लिखा है ।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

उपदेश देकर रावण को अपने साथ ले जाती है । त्रिजटा को स्वप्न और उसके द्वारा सीता को मिली हुई सान्त्वना यहा पर निरूपित है ।

हनुमतसीतयोः मेलनम् –

यहा पर हनुमान् सीता के अङ्क मे मुद्रिका निक्षिप्त करते है । बाद मे सीता को पुछ ने पर अपनी पहचान देते है । यहा पर एक बात द्रष्टव्य है कि हनुमान पर सीता द्वारा अविश्वास का सवाल उठता है । तब हनुमान केवल माता के संबोधन को ही प्रभावित करते है । सीता को विश्वास दिलाते है । बाद मे हनुमान सीतो को अपना विराटरूप दिखाते है । और सीता से विजय के आशीर्वाद पाकर बुभुक्षापूर्ति के लिये अमुनति मांगते है । सीता केवल भूमि पर पडे कल खाने की अमुनति देते है । हनुमान कलत्रोटन कर अपनी बुभुक्षा परितृप्त करते है ।

रावणस्य राज्यसभायाम् -

यहा पर इन्द्रजित् नागपाशो से हनुमान को बान्धकर रावण की सभा मे लाता है । रावण राक्षसनाश तथा अक्षयकुमारवध का कारण हनुमान से पुछता है । हनुमान भी आत्मरक्षा हेतु ये सब हुआ ऐसा बताते है । सीता के अपहरण के बारे मे बताकर उसे मुक्त करने की बात रखते है । तब दुसरी और रावण उसे मृत्युदण्ड देने की घोषणा करते है । पर नीतिविरुद्ध होने के कारण मंत्री उसकी पुच्छ जलानी चाहिये एसा सुझाव बताते है । रावण इसी सुझाव को मानकर ऐसा करता है । अन्तमें हनुमान समग्र लङ्का को जलाने का निर्णय करते है ।

अशोकवाटिकायां हनुमतसीतयोः पुर्नमेलनम्

हनुमान पुनः सीतासे भेट करने हेतु आते है । हनुमान का अनमान हे कि लंका के साथ शायद सीता को भी हानी पहोंची होगी । इस कारण आये हुए हनुमान सीता को सकुशल देखकर शान्त होते है । यहां सीता के द्वारा अपने प्रियतम श्री राम को अपना संदेश भेजती है । हनुमान भी सीता को सांत्वना देते हुए कहते हे कि जल्द ही मेरे कंधे पर बेठकर राम और लक्ष्मण आपकी मुक्ति का कारण बनेगें ।

विभीषणराज्याभिषेक

राम और सुग्रीव का संवाद निरूपित है । ऐसे मे शराणागत के रूप मे विभीषण का आगमन होता है । और शरणागतवत्सल राम उन्हे शरण भी देते है । राम सूर्य को साक्षी मानकर विभीषण का लंका को राजा के रूप मे तिलक करते है । विभीषण अपने वंशगत संस्कृति को राम के समक्ष कहता है और अपने को दोषी मानता है । अन्त मे राम कहते है कि यदि रावण अपनी सीता को मुझे सोंप दे तो उसके सारे पाप माफकर के उसे क्षमा कर दूगाँ । अन्त में राम कहते है कि मे अपनी बात सही नहीं हुई तो विभीषण को अयोध्यापतिः बनायेगें ।

इसी तरह इस नाटक की कथावस्तु हमने अतीव संक्षेप मे जानी अब कविने अपनी दृष्टि से क्या नूतनं प्रयोग किया है इस पर हम चर्चा को प्रस्तुत करेगें ।

नाटक में कविने रावण के लिये जो विशेषण प्रयुक्त किये है जैसे अखण्डप्रौढप्रतापी, संग्रामकेसरी, देवदानवदैत्यग्रहादीनां विजेता, अपराजितौ, षडदर्शनकेसरी, शिवभक्तो, वेदशास्त्रसंपन्न, राक्षसकुलशिरोमणि वह भी कि नई उपज है ।

नाटक में कवि ने बहुत ही संक्षेप में सीता और रावण का संवाद निरूपित किया हैं । और थोडे ही शब्दों मे अपनी बात रखी है । जैसे रावण का सीता को प्रलोभन देना सीता को धमकिया देना, यह बातें नाटक में संक्षिप्त रूप से दर्शाया गया है । साथ में मूलसुन्दरकाण्ड में रावण को समजा बुझाकर मन्दोदरी ही वापीस ले जाती है । हर नाटक में हीं मन्दोदरी नीतिवाचक शब्दो को बताकर रावण को अपनी भवन की और ले जाती हैं । यहा पर ये साम्य मिलता है ।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

नाटक में रावण को इस तरह कहते हुए "अयि सीते यदिमासान्तरे त्वं मम इच्छापूर्ति न करिष्यति तर्हि निस्संकोचं तव शिरच्छेदनं करिष्यामि" यहा हम देख सकते है कि रावण सीता को केवल एक मास की अवधि देता है। जबकि मूलसुन्दरकाण्ड में रावण सीता को दो मास की अवधि देता है।[2]

कविश्रीने नाटक में त्रिजटा के स्वप्न के बारे में दर्शाया है। और मूल सुन्दरकाण्ड मे भी त्रिजटा के स्वप्न के बारेमें दर्शाया गया हैं। इस तरह दोनो में साम्य भी मिलता हैं।

नाटक में हनुमान जब सीता के मिलते है उसके पूर्व मुद्रिका सीता के अंक में फेककर सीता को राम यज्ञ बनाकर धीरे से अपने पहचान इत्यादि बताते है जबकि मूल सुन्दरकाण्ड में हनुमानजी सीता के सामने किस तरह से प्रगट हुए ? इस बारेमें वह आत्ममन्थन करते है और अन्त में संस्कृत भाषा का उपयोग कर सीता के सामने प्रगट होने का निश्चय करते है। इस तरह नाटक में देखे तो हनुमान सीता के सामने प्रगट होने के लिए मुद्रिका का सहारा लेते है। जबकि मूलसुन्दरकाण्ड मे हनुमान संस्कृत श्लिष्ट भाषा का सहारा लेते है।

नाटक में हनुमान सीता को विश्वास दिलाने के लिए मुद्रिका उपरांत मातः ऐसे सम्बोधन को प्रमाण मानते है जबकि मूलसुन्दरकाण्ड में सीता हनुमान से राम के जीवन से जुडी हुई एकान्त बातो को प्रमाणित करते है। एसे प्रमाण के विषय में नाटक और मूलग्रन्थ में भेद देखने को मिलता है।

आठ में दृश्य में हनुमानजी को बांधकर इन्द्रजित सीधा रावण की राज्यसभा में प्रवेश करता है। और बताता है कि कई राक्षसो और अक्षयकुमार की मृत्यु का कारण यह मानव है। मूलसुन्दरकाण्ड में हनुमान क्रमशः मन्त्री के पुत्रो का वध, सेनापति का वध, बाद में अक्षकुमार का वध और अन्त में इन्द्रजित उन्हें बांधकर रावण की सभा में प्रस्तु करते है। इस तरह नाटक और मूलग्रन्थ में यह भेद देखने को मिलता है।

नाटक में कवि घनश्याम ने बताया है कि हनुमानजीने पहले मशकरूप धारण किया था। बाद में विभीषण के साथ संवाद करने हेतु पंडित (पण्डित) ब्राहमण का वेश धारण करते है।[3] जबकि मूल सुन्दरकाण्ड में ऐसी कोई बात बताइ नहि गयी। इस तरह कविश्रीने हनुमान को ब्राहमण के रूपमें बताकर विभीषण के साथ संवाद निरूपित किया है। यहाँ पण्डित ब्राहमण का वेश धारण करने का हेतु हमारी दृष्टि से यह हो सकता है कि यदि ब्राहमण वेश धारण किया जाये तो राम की भक्ति मे मग्न विभीषण को पुरा विश्वास दिला जायेंगा और उसके पास से सीता के बारेमें कुछ न कुछ समाचार भी प्राप्त हो सकेगा। यहँ हमारी दृष्टि से हनुमानजी को ब्राहमण बताना कवि का मूल हेतु सीता शोधन भी है। मूलसुन्दरकाण्ड मे हनुमान सीता का अन्वेषण करते हुऐ कइ जगहो पर जाते है। किन्तु ब्राहम वेश का उल्लेख नही है।

नाटक में हनुमान जब सीता को मिलते है, तब अपने आप को जरा इस तरह दर्शाते है। "मर्कटोऽस्मि सर्वप्रकारेण नीचः। ये जनाः प्रभाते सुप्रभाते मम नामस्मरणं कुर्वन्ति ते वराकाः दिवसपर्यन्तं भोजनं अन्नं न प्राप्नुवन्ति। हे मित्र अहं अधमो वानरः" (पृ-59) इस तरह हनुमान अपने आप को नीचा दिखा कर राम की महिमा का गुणगान गाते है। जब कि मूल सु.का में इस तरह का वर्णन हमें प्राप्त नहीं होता।

विभीषण के साथ संवाद करने के बाद हनुमान दो फल की प्रभुके नाम मन्त्र से दोष दुर होते है। किन्तु मोक्ष

---

[2]. दौ मासौ तेन मे कालो जीवितानुग्रहः कृतः। उर्ध्वं द्वाभ्यां तु मासाभ्याम् ततस्त्यक्ष्यामि जीवितम्॥

[3]. किन्तु तत्र मशकरूपेण न किन्तु पण्डितब्राहमणस्य वेशेन गमिष्यामि। (प्र.58) नूचन-नाट्य-सुन्दरकाण्ड- अंगदविष्टिः

की प्राप्ति प्रभुकार्य से होती है ।[4] यह बात कवि की मौलिक रचना है ।

हनुमात सीता को किस तरह पहचानते है इसका वर्णन करते हुए कवि बताते है कि 'अहं मन्ये यत् अवश्यम् सा आर्या सीता भवेत् । कारणं तस्या दृष्टि हि भगवतः रामचन्द्रस्य चिह्न सदृश चिह्नवत् । एस् भगवान राम के दृष्टि के कारण हनुमान सीता को पहचानते है । जबकि मूलसुन्दरकाण्ड में राक्षसीयो से गीरि हुइ रावण कथा राक्षसीयो से धमकीया तथा प्रलोभन पानेवाली दुःखी सीतो को हनुमान पहचानते है और जिस अशोकवृक्ष के नीचे सीता है उसके उपर हनुमान बेठे है तो इस प्रकार से यह अंश मूलसुन्दरकाण्ड से भिन्न है ।

नाटक में कविने रावण के लिये जो विशेषण प्रयुक्त किये है जैसे अखण्डप्रौढप्रतापी, संग्रामकेसरी, देवदानवदैत्यग्रहादीनां विजेता, अपराजितौ, षडदर्शनकेसरी, शिवभक्तो, वेदशास्त्रसंपन्न, राक्षसकुलशिरोमणि वह भी कि नई उपज है ।

नाटक में कवि ने बहुत ही संक्षेप में सीता और रावण का संवाद निरूपित किया हैं । और थोडे ही शब्दों मे अपनी बात रखी है । जैसे रावण का सीता को प्रलोभन देना सीता को धमकिया देना, यह बातें नाटक में संक्षिप्त रूप से दर्शाया गया है । साथ में मूलसुन्दरकाण्ड में रावण को समजा बुझाकर मन्दोदरी ही वापीस ले जाती है । हर नाटक में हीं मन्दोदरी नीतिवाचक शब्दो को बताकर रावण को अपनी भवन की और ले जाती हैं । यहा पर ये साम्य मिलता है ।

नाटक में रावण को इस तरह कहते हुए "अयि सीते यदिमासान्तरे त्वं मम इच्छापूर्ति न करिष्यति तर्हि निस्संकोचं तव शिरच्छेदनं करिष्यामि" यहा हम देख सकते है कि रावण सीता को केवल एक मास की अवधि देता है । जबकि मूलसुन्दरकाण्ड में रावण सीता को दो मास की अवधि देता है ।[5]

कविश्रीने नाटक में त्रिजटा के स्वप्न के बारे में दर्शाया है । और मूल सुन्दरकाण्ड मे भी त्रिजटा के स्वप्न के बारेमें दर्शाया गया हैं । इस तरह दोनो में साम्य भी मिलता हैं ।

नाटक में हनुमान जब सीता के मिलते है उसके पूर्व मुद्रिका सीता के अंक में फेककर सीता को राम यज्ञ बनाकर धीरे से अपने पहचान इत्यादि बताते है जबकि मूल सुन्दरकाण्ड में हनुमानजी सीता के सामने किस तरह से प्रगट हुए ? इस बारेमें वह आत्ममन्थन करते है और अन्त में संस्कृत भाषा का उपयोग कर सीता के सामने प्रगट होने का निश्चय करते है । इस तरह नाटक में देखे तो हनुमान सीता के सामने प्रगट होने के लिए मुद्रिका का सहारा लेते है । जबकि मूलसुन्दरकाण्ड मे हनुमान संस्कृत श्लिष्ट भाषा का सहारा लेते है ।

नाटक में हनुमान सीता को विश्वास दिलाने के लिए मुद्रिका उपरांत मातः ऐसे सम्बोधन को प्रमाण मानते है जबकि मूलसुन्दरकाण्ड में सीता हनुमान से राम के जीवन से जुडी हुई एकान्त बातो को प्रमाणित करते है । एसे प्रमाण के विषय में नाटक और मूलग्रन्थ में भेद देखने को मिलता है ।

आठ में दृश्य में हनुमानजी को बांधकर इन्द्रजित सीधा रावण की राज्यसभा में प्रवेश करता है । और बताता है कि कई राक्षसो और अक्षयकुमार की मृत्यु का कारण यह मानव है । मूलसुन्दरकाण्ड में हनुमान क्रमशः मन्त्री के पुत्रो का वध, सेनापति का वध, बाद में अक्षकुमार का वध और अन्त में इन्द्रजित उन्हें बांधकर रावण की सभा में प्रस्तु करते है । इस तरह नाटक और मूलग्रन्थ में यह भेद देखने को मिलता है ।

---

4 .केवलनामजपेन जीवनस्य दोषान् दूरीकरोति किन्तु मुक्तये प्रभुहृदये स्थानं मोक्षस्तु प्रभुकार्येण एव भवति न तु नामरूपेन (नू, नाट्य, अं, पृ-60)

5 . दौ मासौ तेन मे कालो जीवितानुग्रहः कुतः । उर्ध्वं द्वाभ्यां तु मासाभ्याम् ततस्त्यक्ष्यामि जीवितम् ।।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

नाटक में रावण हनुमान को मृत्यु दंड देने की बात करते है, किन्तु विभीषण देहांतदंड देने को मना करते है । और मंत्री हनुमानजी की पूंछदहन की बात रखते हे । हनुमान इसको माध्यम बनाकर समग्र लङ्का को जलाने का निश्चय करते है । जबकि मूल सु.का. में रावण और हनुमान का विस्तृत संवाद देखने को मिलता है और हनुमान रावण सीता को सौप दे ऐसा समजाता है । यहाँ पर हनुमान का रावण को समजाना नाटक और मूल सुन्दरकाण्ड मे भेद है ।

नाटक में हनुमान सीता को सांत्वना देते हुए कहते है कि जल्द ही मेरे कन्धे पर बैठ कर राम और लक्ष्मण द्वारा आपकी मुक्ति होगी । जब कि मूल सुं.कां. में हनुमान सीता को सांत्वना देते हुए बताते है कि आप इसी समय मेरे कन्धे पर बैठ जाइये । पर सीता लोकलज्जा के कारण मना करते है और अपनी मुक्ति का गौरव अपने पति को दिलाना चाहती है । यह बात नाटक से बाहर है । इस तरह नाटक और मूल सुं.कां. में भेद देखने को मिलता है ।

नाटक के दशवें दृश्य में विभीषण-राजयाभिषेक नामक शीर्षक बनाकर सुग्रीव तथा राम का संवाद दर्शाया गया है । जबकि मूल सुं.कां. में इस तरह का संवाद सुं.कां. में नहीं बलके शायद युध्धकांड में दिया है ।

उपसंहार –

इस तरह हम देख सकते है कि रामायण जैसे आर्षमहाकाव्य की कथावस्तु को लक्ष्य बनाकर कविश्री घनश्यामजी ने अपनी कृति को सजा-धजाकर वाचक के लिए प्रस्तुत किया है । हमारे इस लेख में यदि कोई क्षति रह गयी हो तो कृपया हमें क्षमा करें ।

<u>संन्दर्भ ग्रन्थ सूची</u>

1. श्रीमद वाल्मीकीय रामायण (दूसरा भाग) –प्रथम भाग
(હિન્દી અનુવાદ સાથે) ગીતાપ્રેસ , ગોરખપુર. વિ.સં. 2064

2. श्रीमद वाल्मीकीय रामायण
(હિન્દી અનુવાદ સાથે)

स्व. चन्द्रशेखर शास्त्री

आस्था प्रकाशन . पटना

3. नूतन- नाट्यसुन्दरकाण्ड-अंगदविष्टीः(केवल संस्कृत)
घनश्याम मा. त्रिवेदी
શ્રી બૃહદ ગુજરાત સંસ્કૃત પરિષદ
2001.

RRIJM 2015, All Rights Reserved